हाईस्कूल कक्षाओं के अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक अध्ययन

(A CRITICAL ESTIMATE OF ECONOMICS SYLLABUS OF HIGH SCHOOL CLASSES)

हाईस्कूल कक्षाओं के अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या में निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं–

(1) सैद्धान्तिकता पर बल–हाईस्कूल कक्षाओं के अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या में सैद्धान्तिक तत्त्व अधिक निहित हैं। इसमें विभिन्न सूक्ष्म विचारों पर अधिक बल दिया गया, जिनको बालक समझने में असमर्थ रहते हैं। इस कारण वे इन्हें तोते की तरह रटते हैं। वस्तुतः इस स्तर की पाठ्यचर्या में सैद्धान्तिकता की अपेक्षा व्यावहारिकता पर बल दिया जाना चाहिए क्योंकि इस स्तर

Scanned with CamScanner

के छात्रों की मानसिक शक्तियाँ परिपक्व नहीं हो पाती हैं। इसके अतिरिक्त वे क्रियाशीलता में अधिक रुचि रखते हैं। अतः इस स्तर की पाठ्यचर्या में प्रयोगात्मक कार्यों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ, उद्योगों, बाजारों की स्थितियों आदि का निरीक्षण कराकर छात्रों को आर्थिक सिद्धान्तों को समझाया जाये। छात्रों से श्रमिक, किसान तथा छात्र बजट तैयार करवाये जायें। **माध्यमिक शिक्षा आयोग** ने इस दोष पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, **"कॉलेजों की पाठ्यचर्या के प्रभाव के कारण माध्यमिक विद्यालयों की पाठ्यचर्या अनुचित रूप से पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक हो गयी है।"**[1]

(2) **जीवन से असम्बद्धता**—हाईस्कूल कक्षाओं की पाठ्यचर्या जीवन से सम्बन्धित नहीं है। छात्र इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात् भी भारतीय आर्थिक जीवन की परिस्थितियों से अवगत नहीं हो पाते, जबकि अर्थशास्त्र-शिक्षण का यह प्रमुख उद्देश्य माना जाता है। इस पाठ्यचर्या में केवल विभिन्न आर्थिक क्रियाओं की सैद्धान्तिक जानकारी पर बल दिया जाता है जबकि ये सिद्धान्त दूसरे देशों की आर्थिक परिस्थितियों में निर्मित किये गये हैं। जीवन से सम्बन्धित करने के लिए यह आवश्यक है कि उनको भारतीय आर्थिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्रदान किया जाये। इसके लिए पाठ्यचर्या में आर्थिक जीवन की व्यावहारिक क्रियाओं एवं समस्याओं को स्थान प्रदान किया जाये। उदाहरणार्थ, घरेलू उद्योग-धन्धों, सहकारी बैंक एवं दुकान, बाजार लगवाना आदि क्रियाओं के संचालन पर बल दिया जाये।

(3) **परीक्षा की प्रधानता**—हाईस्कूल की अर्थशास्त्र की पाठ्यचर्या परीक्षा रूपी भयंकर सर्प से ग्रसित है। इससे अधिकृत होने के फलस्वरूप पाठ्यचर्या में आत्मगत तत्त्वों (Subjective elements) पर बल दिया जाता है।

(4) **रुचि एवं विविधता के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं**—इस स्तर की पाठ्यचर्या बालक की रुचि एवं उनके वैयक्तिक भेदों के अनुकूल नहीं है। यह पाठ्यचर्या छात्रों की रुचियों को सन्तुष्ट करने में असमर्थ है। छात्र अपने वैयक्तिक भेदों के अनुकूल सामग्री प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इस कारण यह अमनोवैज्ञानिक है।

Scanned with CamScanner